International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 07-04-2023, Accepted: 22-04-2023, Published: 08-05-2023
Volume 5, Issue 2, 2023, Page No. 12-13

साहित्य शास्त्र की कसौटी पर अलंकारों की उपादेयता

डॉ. अजय कुमार श्रीवास्तव
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी, राजकीय शिक्षा कॉलेज, चंडीगढ़, हरियाणा, भारत

सारांश
भारतीय साहित्य परम्परा में अलंकार की महत्ता को नकारा नही जा सकता। प्रारंभ में आचार्य भामह ने इसका पुरजोर समर्थन करते हुए इस संप्रदाय की स्थापना की। इस संप्रदाय के महत्व को इस बात से भी जाना जाता है कि सम्पूर्ण काव्य शास्त्र का नाम ही अलंकार शास्त्र के नाम से जाना जाने लगा। तप्श्चत आचार्य दंडी, आचार्य वामन आदि आचार्यों का अभिमत भी अलंकार के पक्ष में रहा है। यहातक की अलंकारों की प्रासंगिकता के सन्दर्भ में संस्कृत और हिंदी के आलोचक भी इसको किसी न किसी रूप में स्वीकार करते है। आचार्य मम्मट अपने काव्य प्रकाश में इसकी प्रासंगिकता, महत्ता को "तद दोषौ शब्दार्थौ सगुणावळंकृति पुनः क्वापि" के रूप में स्पष्ट करते है। इस तरह अलंकार चाहे वाह्य और आतंरिक उपादान के रूप में हो या सौन्दर्य को उद्घाटित करने के लिए अथवा कवि चमत्कार के लिए या रस की निष्पत्ति में सहायक के रूप में हो, अलंकार की महत्ता को स्वीकार करना ही होगा।

मूल शब्दः अलंकार, अलंकार्य, रस, रमणीयता, सौंदर्य सम्पन्नता, गुणधर्म, चमत्कार

अलंकार साहित्य का आभूषण है और यह आभूषण ही साहित्य की भाषा में अलंकार कहे जाते है। जिस प्रकार कोई भी बनिता बिना आभूषण के सुशोभित नहीं होती उसी प्रकार कविता भी बिना आभूषणों के सुशोभित नहीं मानी जाती। साहित्य में कविता के सौंदर्य को बढ़ाने वाले उपकरणों को अलंकार कहते है।
भारतीय साहित्य में अलंकारों का उद्भव अत्यंत प्राचीन माना जाता है। इसके आदि आचार्यो में आचार्य भामह का स्थान प्रमुख है। वह कविता को परिभाषित करते हुए कहते है–शब्दार्थो सहितौ काव्यम १। अर्थात शब्द और अर्थ के सहभाव को काव्य कहते है। यह शब्द और अर्थ का सहभावएकमेव, तथा संश्लिष्ट है उसे अलग करके देखने पर उसका अस्तित्व नगण्य हो जाता है। वह भगवन शिव और माता पार्वती की तरह अर्ध नारीश्वर है। वागर्था विव सम्पृक्तौ वागर्थ प्रतिपत्तये, जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ २।। शब्द और अर्थ का सम्यक मिलाप ही सौंदर्य को उद्घाटित करता है। आचार्य भामह कविता में सौंदर्य को अनिवार्य मानते है। यह सौंदर्य काव्य में उत्पन्न चमत्कार या प्रतिपल नवीनता के रूप में उद्भाषित होना चाहिए।

विषय विवेचन

आचार्य भामह अपनी पुस्तक' काव्यालंकार' में अलंकार को निम्न लिखित रूप में परिभाषित करते हैं–१–अलम करोतीति अलंकारः 3। (जो आभूषित करता हैं वह अलंकार हैं) २ –अलंक्रियते अनेन इति अलंकारः 4। (जिसके द्वारा अलंकृत किया जाता हैं वह अलंकार हैं) ३–अलंकरोति इति प्रसीदति 5। (जिसके कारण द्रष्टा या पाठक अलम–अलम अर्थात बस–बस करने लगता हैं, हर्षोल्लास की स्थिति बन जाती हैं।)
प्रथम परिभाषा में आभूषण के साथ–साथ वह कलाकार जो सजाने में निपुण हैं, यानि (जो उसका गुण धर्म हैं, उसको भी महत्व दिया जा रहा हैं। दूसरी परिभाषा में सौंदर्य को बढ़ाने वाले घटक की बात कही जा रही हैं और तीसरी परिस्थिति की बात भी हैं जिसके अनुसार शृंगार किया जा रहा है। चौथी बात सजे हुए को देख या सुनकर सामजिक खुशी से वाह–वाह कह उठे। सभी परिस्थितियों में आभूषण, (अलंकार), सजने वाला, सजानेवाला, परिस्थिति विशेष तथा उसकी प्रसन्नता का अनुभव करने वाला ये सभी मिलकर ही अलंकार्य और अलंकार के सौंदर्य को पूरी तरह से उद्घाटित कर सकते हैं। यदि इनमे से किसी की भी कमी पायी गयी या किसी के कार्य में कमी पायी गयी तो कविता का सौंदर्य पूर्ण रूप से निखर कर सामने नहीं आ पायेगा औरऐसी परिस्थिति में सौंदर्य का रसास्वादन पूर्ण रूपेण हो ही नहीं पायेगा। परिणामतः अलंकार का प्रयोजन निष्फल हो जायेगा।
आचार्य भामह इसीलिए शब्द और अर्थ को कविता के शरीर और आत्मा के साथ बक्रोक्ति को ही वाणी का अलंकार मानते हैं–बक्राभिधेयशब्दोक्तिरिश्तावाचां लंकृतः ६। आचार्य बाबू गुलाब राय–अलम का अर्थ पूर्ण या पर्याप्त करना स्वीकार करते हैं। उनका मानना हैं की अलंकार शोभा को पूर्ण या पर्याप्त करते हैं। इसीकारण इन्हे अलंकार कहते हैं ७। इस तरह अलंकार को इस रूप में सीधे–सीधे शब्दों में समझा जा सकता हैं कि जिस प्रकार हार, कुण्डल आदि आभूषण किसी रमणी की शोभा की अभिवृद्धि करते हैं, उसी प्रकार कामिनी की सौंदर्य वृद्धि करनेवाले उपमा, रूपक, अनुप्रास आदि अलंकार कहलाते हैं। ये अलंकार काव्य सौंदर्य को पूर्णता या पर्याप्तता प्रदान करते हैं। इस प्रकार ये वाणी के अलंकार या विधान हैं।
आचार्य दण्डी अपनी पुस्तक "काव्यादर्श" में अलंकार को सौंदर्य के कारण भूत धर्म के रूप में स्वीकार करते हैं। आचार्य दण्डी–काव्यशोभाकरान धरमानलंकार प्रचक्षते। आचार्य दण्डी का मंतव्य अलंकार को कारण भूत धर्म के रूप में मानने से अलंकार सौंदर्य का मूल घटक हो जाता हैं यानी बिना अलंकार के कविता अपने सौंदर्य के चरमोत्कर्ष को प्राप्त ही नहीं कर पायेगी। इस विचार कोएक सोपान और आगे बढ़ाते हुए प्रसिद्ध समीक्षक आचार्य वामन ने कविता को ग्राह्य कैसे किया जायेगा इसके लिए अलंकार को महत्त्व देते हैं–काव्यम ग्राह्यंलंकारात। सौन्दर्यं अलंकारः। आचार्य वामन जी इस बात को स्थापित करते हैं कि अलंकार द्वारा ही काव्य ग्राह्य होता हैं और सौंदर्य ही अलंकार हैं। कविता की सबसे प्रमुख बात उसका सौंदर्य हैं और यह सौंदर्य अलंकार के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता हैं। अग्नि पुराण में सरस्वती को अलंकार रहित होने पर विधवा के रूप में कहा गया हैं–अलंकार रहिता विधवैव सरस्वती १०। आचार्य रुद्रट विशेष प्रकार के अविधान को अलंकार के रूप में स्वीकार करते हैं। उनका मानना हैं कि विशेष प्रकार के अविधान का अर्थ अलंकारों के प्रयोग की निपुणता से हैं, जो काव्य निर्माता की शब्द संरचना और पद संरचना पर निर्भर करती हैं। अर्थात कवि कौशल जन्य चमत्कार से हैं। अभिधान प्रकार विशेषाएवं चालंकाराः ११। भाव यह हैं कि वे धर्म या तत्व जो काव्य में

सौंदर्य वृद्धि करते हैं उसे पूर्णता प्रदान करते हैं अलंकार कहे जाते हैं। इनसे भावों में रमणीयता और प्रेषणीयता, अभिव्यक्ति में स्पष्टता तथा सौंदर्य सम्पन्नता उत्पन्न होती हैं। अतः काव्य में इनकी उपयोगिता सर्व स्वीकार्य हैं।

अलंकार = भावों की+अभिव्यक्ति < रमणीयता, प्रेषणीयता, स्पष्टता, सौंदर्य सम्पन्नता = काव्य की पूर्णता।

आचार्य भामह से लेकर आचार्य रुद्रट तक अलंकार को महत्व देने वालों ने कविता के सौंदर्य के लिए अलंकार कोएक महत्त्व पूर्ण उपादान माना हैं। यद्यपि रस संप्रदाय का प्रकाश भी अपने आप में प्रभाव शाली रहा हैं फिर भी अलंकार के महत्तव को रूपायित करना, स्थापित करना इन आचार्यो की विचारधारा को मानने के लिए सोचने पर विवश करता हैं। आचार्य भामह ने तो यहाँ तक कह दिया—न कान्तमपि निर्भूषम विभाति वनिता मुखम १२। अर्थात जिस तरह नारी बिना अलंकार के सुशोभित नहीं होती उसी प्रकार कविता भी अलंकारों के आभाव में सुशोभित नहीं होती। आचार्य मम्मट यद्यपि रस वादी आचार्य माने जाते हैं परन्तु अपने ग्रन्थ काव्य प्रकाश में अलंकारों की महत्ता को स्वीकार करते हुए लिखा है—तद दोषौ शब्दार्थौ सगुणावळंकृति पुनः क्वापि १३। अर्थात दोष से रहित गुणयुक्त और (साधारणतः अलंकार सहित परन्तु कही—कही अलंकार रहित) शब्द और अर्थ (दोनों की समष्टि)काव्य कहलाती हैं। आचार्य की दोनों की समष्टि का अर्थ आचार्य भामह के 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम' का ही कथन हैं। रस संप्रदाय का होने के कारण आचार्य मम्मट संकोच भाव से अपनी बात खुलकर रख नहीं पा रहे है। फिर भी उन्होंने अलंकारों की महत्ता को स्वीकार किया हैं। रस और अलंकार का संबध अलंकार्य और अलंकार से हैं। अलंकार और अलंकार्य काएक दूसरे से सम्बन्ध अंग और अंगी से हैं। बिना अंग के अंगी की पूर्णता बाधित होती हैं और बिना अंगी के अंग बेजान होते हैं। यही सम्बन्ध रस (अंगी,अलंकार्य) और अलंकार (आभूषण, उपादान) काएक दूसरे से हैं।

इस तरह संस्कृत काव्यशात्र परम्परा में कमोबेश सभी आचार्यो ने किसी न किसी रूप में अलंकारों को स्वीकार किया हैं और महत्तव दिया हैं। हिंदी के कवियों ने भी इस पर खुलकर अपने विचार व्यक्त किये हैं। आचार्य केशव ने अलंकारों के विषय में लिखा हैं—जदपि सुजात सलक्षणी, सुबरन सरस सुवृत्त। भूषण बिना न सोहहि, कविता बनिता मित्त १४।। अलंकार के संदर्भ में आधुनिक समीक्षक इसे उपादान कारक के रूप में ही स्वीकार करते है, वह अलंकारों को नितांत वाह्य उपादान न मानते हुए इसे आतंरिक सौंदर्य के रूप में स्वीकार करने के पक्षधर है। आचार्य बाबू गुलाब राय जी का कहना है—पुष्प बाहरी सौंदर्य ही नहीं है वरन वह आतंरिक सौंदर्य का भी निरूपण करते है (इसीलिए फूल बृक्ष के अलंकार कहे जाते हैं।) उसी तरह जैसे सरोवर की शोभा कमल से हैं उसी तरह कमल की शोभा में सरोवर का भी योगदान हैं। दोनों मिल कर हीएक दूसरे के सौंदर्य को पूर्ण रूपेण उद्घाटित कर पाते हैं।एक दूसरे के आभाव में पूर्णता आ ही नहीं पायेगी और काव्य का सौंदर्य पूरी तरह से प्रकाशित नहीं हो पायेगा १५।

निष्कर्ष

यह कहा जा सकता हैं की अलंकार और अलंकार्यएक दूसरे के पूरक हैं। अलंकार्य का सम्बद्ध अनुभूति पक्ष से हैं तो वही अलंकार अभिव्यक्ति पक्ष से सम्बंधित हैं। अनुभूति और अभिव्यक्ति की तरह अलंकार्य और अलंकार का अटूट सम्बद्ध हैं। अलंकार को न तो हम कानन कुण्डल की तरहएकदम वाह्य कह सकते हैं, ऐसा करने पर उनकी स्थिति आरोपित (थोपने) जैसी हो जाएगी और न ही रस, भाव की तरह पूर्णतः अंतरंग ही माना जा सकता हैं क्योकिऐसा मानने पर उनका अलंकारत्व नष्ट हो जायेगा। फिर भी अलंकार किसी न किसी रूप में काव्य के लिए प्रासंगिक जरूर हैं। इनकी महत्ता को लगभग सभी युग में आचार्यो ने स्वीकार किया हैं। इसमें संदेह नहीं की यह कविता का वर्ण्य विषय नहीं हैं फिर भी इनका अपना महत्व हैं और इनकी अपनी उपादेयता। इनके उपयोग की आधिक्यता कविता की सहजता को असहज करती हैं जबकि इनकी सम्यकता कविता में चार चाँद लगाती हैं। बिना अलंकार के कविता की पूर्णता को प्राप्त नहीं किया जा सकता।

संदर्भ सूचि

1. आचार्य भामहः काव्यालंकार
2. कालिदासः रघुवंशम
3. आचार्य भामहः काव्यालंकार
4. वही
5. वही
6. वही
7. बाबू गुलाब रायः काव्य के रूप
8. आचार्य दण्डीः काव्यादर्श
9. आचार्य वामनः काव्यालंकार सूत्र वृत्तिः
10. अग्नि पुराण
11. आचार्य रुद्रटः काव्यालंकार
12. आचार्य भामहः काव्यालंकार
13. आचार्य मम्मटः काव्य प्रकाश
14. आचार्य केशव दासः कविप्रिया
15. बाबू गुलाब रायः काव्य के रूप